1. **Dr. Seema Suryawanshi**

ISBN 978-93-91119-22-5

पुस्तक	:	प्रभा खेतान के साहित्य में विविध स्वर
सम्पादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	प्रथम, 2021
मूल्य	:	750/- (सात सौ पचास रुपये मात्र)
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

ISBN 978-93-91119-22-5

पुस्तक	:	प्रभा खेतान के साहित्य में विविध स्वर
सम्पादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	प्रथम, 2021
मूल्य	:	750/- (सात सौ पचास रुपये मात्र)
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

2

5:19 pm

2. Dr. Laxmichand

अनुक्रम

1. अन्या से अनन्या तक : आधुनिकता और स्त्री आधार
प्रो. लक्ष्मीचंद
2. प्रभा खेतान का अनुवाद साहित्य - 'स्त्री उपेक्षिता'
डॉ. ममता पाठक
3. अन्या से अनन्या : आत्मकथा से झलकता अपराध बोध
डॉ. मीना राठौर
4. प्रभा खेतान : अहसासों का रीतापन
डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला
5. प्रभा खेतान की वैचारिक दृष्टि संदर्भ : महिला आरक्षण एवं उपनिवेश में स्त्री
दिनेश भट्ट (साहित्यकार)
6. प्रभा खेतान की कविता में स्त्री स्वर
प्रो. रेखा पी. मेनोन
7. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ़ : प्रभा खेतान
प्रदीप कुमार विश्वकर्मा
8. अन्या से अनन्या : स्त्री संवेदनाओं को उकेरती मार्मिक कथा
डॉ. विजय कलमधार
9. प्रभा खेतान के उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक मूल्य
डॉ. निर्मला शर्मा
10. मानवीय गरिमा की खोज में स्त्री
डॉ. टीकमणि पटवारी
11. स्त्री त्रासदी की जीवंत गाथा
डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव
12. सामाजिक मानसिकता के दायरे में स्त्री
डॉ. मनीषा आमटे
13. मैं और मेरे प्रश्न ('मैं' हर स्त्री का प्रतीक)
डॉ. सीमा सूर्यवंशी
14. प्रभा खेतान के कथा साहित्य में स्त्री विषयक चिन्तन
डॉ. संतोष कुमार अहिरवार
डॉ. हरीसिंह गौर

5:19 pm

ISBN 978-93-91119-22-5

पुस्तक	:	प्रभा खेतान के साहित्य में विविध स्वर
सम्पादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	प्रथम, 2021
मूल्य	:	750/- (सात सौ पचास रुपये मात्र)
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

3

5:19 pm

3. Dr. LaxmikantChandela

अनुक्रम

1. अन्या से अनन्या तक : आधुनिकता और स्त्री आधार
प्रो. लक्ष्मीचंद
2. प्रभा खेतान का अनुवाद साहित्य - 'स्त्री उपेक्षिता'
डॉ. ममता पाठक
3. अन्या से अनन्या : आत्मकथा से झलकता अपराध बोध
डॉ. मीना राठौर
4. प्रभा खेतान : अहसासों का रीतापन
डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला
5. प्रभा खेतान की वैचारिक दृष्टि संदर्भ : महिला आरक्षण एवं उपनिवेश में स्त्री
दिनेश भट्ट (साहित्यकार)
6. प्रभा खेतान की कविता में स्त्री स्वर
प्रो. रेखा पी. मेनोन
7. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ़ : प्रभा खेतान
प्रदीप कुमार विश्वकर्मा
8. अन्या से अनन्या : स्त्री संवेदनाओं को उकेरती मार्मिक कथा
डॉ. विजय कलमधार
9. प्रभा खेतान के उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक मूल्य
डॉ. निर्मला शर्मा
10. मानवीय गरिमा की खोज में स्त्री
डॉ. टीकमणि पटवारी
11. स्त्री त्रासदी की जीवंत गाथा
डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव
12. सामाजिक मानसिकता के दायरे में स्त्री
डॉ. मनीषा आमटे
13. मैं और मेरे प्रश्न ('मैं' हर स्त्री का प्रतीक)
डॉ. सीमा सूर्यवंशी
14. प्रभा खेतान के कथा साहित्य में स्त्री विषयक चिन्तन
डॉ. संतोष कुमार अहिरवार
डॉ. हरीसिंह गौर

ISBN 978-93-91119-22-5

पुस्तक	:	प्रभा खेतान के साहित्य में विविध स्वर
सम्पादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर – 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	प्रथम, 2021
मूल्य	:	750/- (सात सौ पचास रुपये मात्र)
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

4. Dr. Teekmani Patwari

अनुक्रम

1. अन्या से अनन्या तक : आधुनिकता और स्त्री आधार
   प्रो. लक्ष्मीचंद
2. प्रभा खेतान का अनुवाद साहित्य – 'स्त्री उपेक्षिता'
   डॉ. ममता पाठक
3. अन्या से अनन्या : आत्मकथा से झलकता अपराध बोध
   डॉ. मीना राठौर
4. प्रभा खेतान : अहसासों का रीतापन
   डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला
5. प्रभा खेतान की वैचारिक दृष्टि संदर्भ : महिला आरक्षण एवं उपनिवेश में स्त्री
   दिनेश भट्ट (साहित्यकार)
6. प्रभा खेतान की कविता में स्त्री स्वर
   प्रो. रेखा पी. मेनोन
7. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ़ : प्रभा खेतान
   प्रदीप कुमार विश्वकर्मा
8. अन्या से अनन्या : स्त्री संवेदनाओं को उकेरती मार्मिक कथा
   डॉ. विजय कलमधार
9. प्रभा खेतान के उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक मूल्य
   डॉ. निर्मला शर्मा
10. मानवीय गरिमा की खोज में स्त्री
    डॉ. टीकमणि पटवारी
11. स्त्री त्रासदी की जीवंत गाथा
    डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव
12. सामाजिक मानसिकता के दायरे में स्त्री
    डॉ. मनीषा आमटे
13. मैं और मेरे प्रश्न ('मैं' हर स्त्री का प्रतीक)
    डॉ. सीमा सूर्यवंशी
14. प्रभा खेतान के कथा साहित्य में स्त्री विषयक चिन्तन
    डॉ. संतोष कुमार अहिरवार
    डॉ. हरीसिंह गौर

ISBN 978-93-91119-22-5

पुस्तक	:	प्रभा खेतान के साहित्य में विविध स्वर
सम्पादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	प्रथम, 2021
मूल्य	:	750/- (सात सौ पचास रुपये मात्र)
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

5. Dr. Seema Suryawanshi

अनुक्रम

1. अन्या से अनन्या तक : आधुनिकता और स्त्री आधार
   प्रो. लक्ष्मीचंद
2. प्रभा खेतान का अनुवाद साहित्य - 'स्त्री उपेक्षिता'
   डॉ. ममता पाठक
3. अन्या से अनन्या : आत्मकथा से झलकता अपराध बोध
   डॉ. मीना राठौर
4. प्रभा खेतान : अहसासों का रीतापन
   डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला
5. प्रभा खेतान की वैचारिक दृष्टि संदर्भ : महिला आरक्षण एवं उपनिवेश में स्त्री
   दिनेश भट्ट (साहित्यकार)
6. प्रभा खेतान की कविता में स्त्री स्वर
   प्रो. रेखा पी. मेनोन
7. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ़ : प्रभा खेतान
   प्रदीप कुमार विश्वकर्मा
8. अन्या से अनन्या : स्त्री संवेदनाओं को उकेरती मार्मिक कथा
   डॉ. विजय कलमधार
9. प्रभा खेतान के उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक मूल्य
   डॉ. निर्मला शर्मा
10. मानवीय गरिमा की खोज में स्त्री
    डॉ. टीकमणि पटवारी
11. स्त्री त्रासदी की जीवंत गाथा
    डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव
12. सामाजिक मानसिकता के दायरे में स्त्री
    डॉ. मनीषा आमटे
13. मैं और मेरे प्रश्न ('मैं' हर स्त्री का प्रतीक)
    डॉ. सीमा सूर्यवंशी
14. प्रभा खेतान के कथा साहित्य में स्त्री विषयक चिन्तन
    डॉ. संतोष कुमार अहिरवार
    डॉ. हरीसिंह गौर

ISBN 978-93-91119-22-5

पुस्तक	:	प्रभा खेतान के साहित्य में विविध स्वर
सम्पादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	प्रथम, 2021
मूल्य	:	750/- (सात सौ पचास रुपये मात्र)
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

6. Dr. Rachna Lariya

15. स्त्री अस्मिता : एक दृष्टि 'अपने-अपने चेहरे' उपन्यास के संदर्भ में
डॉ. रचना लारिया
16. अहल्या - एक यात्रा 'प्रसुप्ति से जागृति'
डॉ. नमिता साहू
17. स्त्री चेतना का जीता जागता दस्तावेज
डॉ. अमित शुक्ल
18. प्रभा खेतान का आत्मकथा साहित्य
डॉ. सागर भनोत्रा
19. प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री चेतना
डॉ. रश्मि नागवंशी
20. किरदारों और किस्सों की जुगलबंदी है हुस्नाबानों और अन्य कविताएँ
शेफाली शर्मा
21. प्रभा खेतान और समकालीन महिला साहित्यकार
डॉ. गणेश भंवर
22. प्रभा खेतान के साहित्य में आधुनिकताबोध
डॉ. श्याम मोहन पटेल
23. प्रभा खेतान के आत्मकथा साहित्य मे स्त्री अस्मिता
डॉ. वारिश जैन
24. प्रभा खेतान का उपन्यास साहित्य
डॉ. पायल लिल्हारे
25. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी मुक्ति के स्वर
कमला नरवरिया
26. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी चित्रण
डॉ. रीना रमेश सुरडकर
27. प्रभा खेतान का साहित्य : मुक्ति की लम्बी दास्ता
अनीता बंसल
28. अस्तित्व न अस्मिता के साथ नई जमीं की तलाश
डॉ. शाहिन खान
29. प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री विमर्श
संगीता सिंह
30. प्रभा खेतान की रचनाधर्मिता
डॉ. शशिकांत चंदेला

ISBN 978-93-91119-22-5

पुस्तक	:	प्रभा खेतान के साहित्य में विविध स्वर
सम्पादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	प्रथम, 2021
मूल्य	:	750/- (सात सौ पचास रुपये मात्र)
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

7. Pratibha Pahade

32. यथार्थ जीवंत कथा को उकेरती प्रभा खेतान
डॉ. अंजुम
33. प्रभा खेतान विहंगावलोकन
डॉ. सुधीर कुमार विश्वकर्मा
34. व्यक्तित्व की झलक एवं रचना-धर्मिता
कु. प्रतिभा पहाड़े
35. प्रभा खेतान की रचनाओं में स्त्री चिंतन एवं संघर्ष
सोलंकी धरनी विनोद भाई
36. प्रभा खेतान एवं समकालीन लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री-विमर्श
डॉ. शबाना मनियार
37. प्रभा खेतान की रचनाओं में स्त्री चेतना का विकास
प्रो. प्रकाश वास्कले

8. Dr. Seema Suryawanshi

हिन्दी साहित्य

विमर्श के आईने में

संपादक
डॉ. पायल लिल्हारे
डॉ. श्याम मोहन पटेल

ISBN : 978-93-90052-11-0

मूल्य : एक हजार सौ रुपये मात्र

पुस्तक : हिन्दी साहित्य : विमर्श के आईने में
संपादक : डॉ. पायल सिलहरे, डॉ. श्याम मोहन पटेल
© : संपादक
प्रकाशक : वान्या पब्लिकेशंस
3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
कानपुर - 208 021
Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
Website : www.vanyapublications.com
Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण : प्रथम, 2021
मूल्य : ₹ 1100.00
आवरण : के. रवीन्द्र
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : पूजा प्रिंटर्स, कानपुर

46.
समकालीन साहित्य में लोक विमर्श

9. Dr. Ritu Sharma

REPORT CUM RESEARCH COMPENDIUM OF NATIONAL WEBINAR ON CURRICULAR ASPECTS : NAAC CRITERION 1

National Webinar

26th - 27th June 2020

SAROJINI NAIDU GOVT. GIRLS' P.G. (AUTONOMOUS) COLLEGE, BHOPAL

SPONSORED BY
WORLD BANK PROJECT
AND
DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION M.P.

CONTENTS

S. No.	Author	Title	Page No.
1	Dubey C S	Designing LOCF based courses for Fourth Industrial Revolution	11
2	Sundaram S.	Academic Flexibility	14
3	Seshadri M.	IQAC : Functioning & its Role	22
4	Tripathi R.	NAAC -Revised Accreditation Framework & Student Feedback System	24
5	Nair U.K.	Curriculum Enrichment	33
6	Ghanshyam G.A.	Assure Quality to Ensure Equity	38
7	Muralikrishnan T.R.	Curricular Planning & Implementation	42
8	Chawdhry V.	Digital Competency: Prospects & Challenges	53
9	Garg Jaya	Higher Education in India - Introspection & Remediation	62
10	Kakar K.	Curriculum Design & Development	69
11	Garg H.K.	Curricular Competence through Learner's Cafeteria	74
12	Javed Indira	Competency based Curriculum Design	81
13	Banerjee M.	The Authentic Connect of Feedback System in Academic Curriculum	87
14	Dwivedi N.	Role of ICT Enabled English Language, Teaching in Present Scenario	90
15	Swamy M, Sharma R.	Teaching of Zoology : The Current Challenges & Future Perspectives	94
16	Sumit	Academic Flexibility	99
17	Sankat D.	Revision of Curriculum in Botany at Under Graduate Level	103

Teaching of Zoology: The current challenges and future perspectives

Meena Swamy and Ritu Sharma
Department of Zoology,
Govt. Autonomous P.G. College
Chhindwara, M.P., India
E-mail: ritubohre@rediffmail.com

Abstract

The current challenges (increasing levels of integration in the biological sciences) facing the teaching of zoology and the structure of the zoology curriculum are explored herein. General context and a perspective on the challenges facing curriculum evolution is provided. The longer term impact of such changes in emphasis on central teaching of zoology is discussed, and the role that zoology can play in dealing with both science content and science education is advanced. Extensive curriculum redesign is needed to ensure that zoology provides a broad-scale integrative approach to the understanding of biodiversity in evolutionary, ecological and functional contexts. Barriers to, and drivers of change are identified and the need for collaborative approaches to curricular evolution is emphasized.

Key words

Curriculum, education, program, undergraduate, zoology.

Introduction

The XXth International Congress of Zoology included a symposium on "Diversity in teaching zoology". This presented the opportunity to reflect on the challenges currently facing the teaching of zoology and, in particular, the challenges facing curricular change in light of both the recent explosion of information, and the attendant subdivision of animal biology into a wide array of disciplines (Bennett 2008). The new International Congresses of Zoology are devoted to reuniting different zoological subdisciplines (ISZS 2008) and, therefore, present an appropriate and ongoing forum for discussing the teaching of zoology at the undergraduate level, and the emergent issue of the development of an integrated curriculum.

The subdivision of zoology has expanded the bailiwick of animal biology and has aligned it more closely with sister disciplines. This has taken place as a result of the biological sciences coalescing into a unified continuum from biomolecules to the biosphere. Teaching zoology, and teaching students of zoology, now entails teaching integrative biology to integrative biologists. Such students expect to focus on various aspects of animal biology as a means of understanding particular biological phenomena, rather than to learn a catalogue of facts. Contemplation of this newly-emerging educational situation reveals challenges related to the

10 Dr. LaxmikantChandela

साहित्य का आपद् धर्म

संपादक

लक्ष्मीकान्त चंदेला

परिकल्पना

11 Dr. LaxmikantChandela

© सम्पादक व लेखकगण

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN : 978-93-87859-99-9

मूल्य : ₹ 495/-

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, बी-7, सरस्वती कामप्लेक्स,
सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 से प्रकाशित और
शेष प्रकाश शुक्ला, दिल्ली से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

7. आपात् काल में साहित्य का 'एकई धर्म एक व्रत नेमा'

डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला

सृष्टि निर्माण से लेकर आज तक ऐसा कोई भी युग, देश-काल, समाज और व्यक्ति जीवन नहीं रहा जिन्हें मुसीबतों का सामना न करना पड़ा हो, जीवन-संघर्ष में जूझा न हो। जीवन में कभी-न-कभी, किसी-न-किसी तरह की मुसीबतें तो आयी ही होंगी। अब चाहे वह सामान्य जन हो या संवेदनशील हृदय, गरीब हो या अमीर, साक्षर या निरक्षर, सबका जीवन 'मुसीबतों का साक्षी' रहा है। विपदाओं का स्वरूप भिन्न हो सकता है, काल के प्रवाह में अलग दिशा रही हो पर सुख के साथ दुःख तो जीवन ने भोगा ही है।

फिर सृष्टि का, चराचर जगत् का, प्रकृति का अपना एक धर्म है वैसे ही साहित्य का भी अपना धर्म है। अचानक धर्म का यह प्रश्न, कई सवाल खड़े करता है। आखिर क्यों? क्या मानव जीवन खतरे में है या धर्म? इस पर चिंतन करते हैं तो समक्ष आता है कि धर्म तो धर्म है; अपने हर रूप, मर्यादा और नीति-नियति तथा संस्कारों में। फिर धर्म-निरापद् और आपद्, दो रूपों में दिखाई देता है। सामान्य जीवन में निरापद् धर्म केवल धर्म के रूप में मान्य-प्रतिमान्य है किन्तु मुसीबत की घड़ी में आपद् के रूप में समक्ष आता है।

आपद् धर्म को जानें इससे पहले साहित्य के अर्थ को अति संक्षेप में जानना आवश्यक। संस्कृत में लिखा है–'सहितस्य भाव साहित्यं' यानि जिसमें सहित का भाव हो, वही साहित्य है। इसी प्रकार, धर्म का तात्पर्य होता है जिसे धारण किया जाए या धारण करने वाला। अब द्विपदीय शब्द 'आपद् धर्म' की परिभाषा की ओर चलते हैं तो देखते आपद् शब्द की निर्मिति भी अति जिज्ञासापरक है। यानि 'आपद्' आफ्त से बना है तदन्तर लोक मुख में प्रयुक्त होते-होते आपात् हो जाता है तथा संधि-संध्यंगों व उनके व्यवहारों के आधार पर आपद् हो जाता है। जिसके–'मुसीबत, संकट, आदि पर्याय भी व्यवहृत हैं। समानार्थी के तौर अकाल,

28. धनजल-ऋणजल एवं साहित्य का आपद धर्म

12. Dr. Teekmani Patwari

डॉ टीकमणि पटवारी

साहित्य का धर्म है पीड़ित और कमजोर के पक्ष में खड़े होना, शाश्वत जीवन मूल्यों को बनाये रखना, समाज को दिशा देना, समन्वय और संतुलन कायम करना। यही मूल्य आपदा के समय भी साहित्य के मर्म को प्रकट करते है, मानवता की रक्षा हेतु जीवन अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करते है। प्राकृतिक आपदाएं मनुष्य जीवन का हिस्सा रही हैं किन्तु आज की आपदा कृत्रिम है जो मनुष्य की आधुनिक और स्वार्थपूर्ण जीवन शैली का ही परिणाम है जिससे मनुष्यता त्रस्त है। पुराणों में आपदाओं को दैहिक, दैविक, भौतिक तापा कहकर संबोधित किया गया है। आपदा के समय साहित्य धर्म क्या होना चाहिये? इस प्रश्न के उत्तर को किसी एक परिभाषा में बांधा नहीं किया जा सकता, 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई पर। पीड़ा सम नहीं अधमाई।।' 'धीरज धर्म मित्र अरुनारी। आपतकाल परखहू चारी।।' करुणा, निष्ठा, सत्य की रक्षा, मूल्यों की स्थापना शोषित के पक्ष में खड़ा होना, समाज की विद्रूपताओं को उजागर करना एवं उनका हल खोजना सभी इस धर्म में शामिल है। मुझे लगता है आपदा के समय एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की सहायता के लिये कहां तक तत्पर हो सकता है यह आपद धर्म का त्वरित पक्ष होना चाहिये। सामाजिक प्राणी होने के नाते हमें दूसरों के कल्याण हेतु सोचना ही होगा उसे कार्य रूप में परिणत करना होगा।

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित रिपोर्ताज धनजल-ऋणजल में साहित्य के आपद् धर्म को मुखर अभिव्यक्ति मिली है। 1945 से 1975 के बीच लिखे उनके रिपोर्ताज साहित्य के इतिहास में उल्लेखनीय तो हैं ही आज की वैश्विक महामारी ज्वलंत उदाहरण बने हुए हैं। प्रस्तुत शोध विषय पूर्णिया सहरसा का अकाल-हड्डियों का पुल(1950), दक्षिण बिहार का अकाल-भूमिदर्शन की भूमिका(1966) एवं पटना जल प्रलय-पुरानी कहानी-नया पाठ(1975) पर केन्द्रित है। इन रिपोर्ताजों में

क्षेत्रीय इतिहास के विविध आयाम

13. Dr. LaxmikantChandela

(सतपुड़ा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

प्रधान संपादक

डॉ. पी.आर. चंदेलकर

संपादक

डॉ. धनाराम

अर्थ पब्लिकेशन

छिन्दवाड़ा – 480001 (म.प्र.)

संपर्क : 7354153350

E-mail : earthpublication.cwa@gmail.com

- क्षेत्रीय इतिहास के विविध आयाम (सतपुड़ा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

- संपादक : डॉ. धनाराम
- संस्करण : प्रथम संस्करण 2021
- ISBN : 978-81-945954-6-5
- मूल्य : 500 रूपये
- प्रकाशक : अर्थ पब्लिकेशन
  छिन्दवाड़ा - 480001 (म.प्र.)
  संपर्क : 7354153350
  E-mail : earthpublication.cwa@gmail.com
- मुद्रक : अर्थ पब्लिकेशन एण्ड प्रिंटर

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन – फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/संपादक/प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध–पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/प्रकाशक इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

बदलते समय में छिंदवाड़ा के लोक देवता

डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला, सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिंदवाड़ा (म.प्र.)

शोध सारांश

लोक देवता, लोक की संस्कृति, अनुशासन और जीवन–तत्व होते है, जो सदैव वर्तमान और जीवन्त होते हैं। फिर क्या समय के बदल जाने से लोक के अनुशासन बदल जायेंगे? नहीं। बस! ये लोक के अनुशासन ही लोक देवता हैं, इसलिए छिंदवाड़ा जिले के लोक में बसे हैं, जीवन्त हैं, तथा समूचा लोकमानस धारण किए हुए हैं – बदलते समय की आहट, बदलाव और मूल्यों के साथ। लोकानुशासित परम्परा तथा लोक शक्ति–साधना, सदैव लोक देवताओं में वर्तमान रहते हैं। इतना ही नहीं संघर्ष ही जीवन है, की शिक्षा लोक देवताओं के अनुशासन से मिलती है। इसलिए छिंदवाड़ा जिले के लोक देवताओं का यह अनुशासित सांस्कृतिक वैभव इतिहास की धरोहर है।

पारिभाषिक शब्द – समय, समाज, गांव, लोक और देवता

समय बदला, गांव बदला, गांव का भूगोल बदला, गांव के मायने बदले, संस्कृति–संस्कार और मान्यताओं में भी आमूलचूल परिवर्तन हुआ। व्यक्ति की सोच का दायरा विस्तृत या संकुचित हुआ स्वतंत्र विश्लेषण का विषय है। पर व्यक्ति की सोच में बदलाव जरूर आया है। विकास के मानदंडों पर बदला है, पर छिंदवाड़ा जिले के गांवों का भौगोलिक स्वरूप बहुत बदले हैं पर आज भी कुछ है जो नहीं बदला और वह है लोक। जब लोक नहीं बदला तो उसके मूल्य, मान्यताएं और अराधना की परम्परा कैसे बदल सकती है?

फिर जब लोक है तो लोक देवता भी होंगे ही। छिंदवाड़ा जिले के प्रत्येक गांव में लोक देवता–ग्राम देवता का वास है जिसे लोक अपनी तरह से मनाता–तपाता है। बदलते समय में यह कहना अंधविश्वासी ही कहलायेगा। सारा सदन तो क्या कोई भी कहने से नहीं चूकेगा। बेशक ग्राम्य परम्परा और मान्यताएं आज भी लोकमन में विद्यमान है, पूरी जीवन्तता के साथ, सांस्कृतिक विरासतों के साथ। समय तो भू–माफियों, उद्योगपतियों, व्यापारियों, दलालों, के लिए बदला है। किसानों, मजदूरों, श्रमिकों, हरवाहों–घरवाहों के लिए नहीं। जैसा कल था वैसा ही आज भी है। श्रम करना और शोषण का शिकार हो जाना जैसे उनकी नियति है।

दरअसल लोक तो समय को अनुकूल बनाता है व पूरा–पूरा जी लेता है या कहें पूरी जिन्दगी समय के साथ जीता है। ऐसा वहीं कर सकता है जो सच्चा लोक का

14 बदलते समय में छिन्दवाड़ा के लोक देवता — 76
डॉ लक्ष्मीकान्त चंदेला

15 पर्यटन, आस्था व मानसिक शांति का संगम स्थल जामसांवली — 81
महेन्द्र साहू

16 Prehistoric Art in Pachmari Hills — 87
Dr. Ekta Pal

17 छिन्दवाड़ा जिले की जनजातियों की संस्कृति में परिवर्तन — 91
डॉ शाहिदा बेगम मंसूरी

18 राजा जाटवा, देवगढ़ (छिन्दवाड़ा), गोंड राजवंश का संस्थापक — 97
डॉ. सुदेश कुमार मेहरोलिया

19. सविनय अवज्ञा आंदोलन में मध्य प्रदेश के विद्यार्थियों, आदिवासियों, स्त्रियों एवं श्रमजीवी वर्गों की भूमिका — 101
डॉ. मनोज कुमार सवैया

20. क्षेत्रीय पुरातत्व (अभिलेख, स्मारक, सिक्के आदि से संबंधित) — 106
डॉ. कन्हैया लाल धुर्वे

21. शहडोल संभाग का ऐतिहासिक परिदृश्य — 110
डॉ. कुन्ती साहू

22. तकनीकी और विज्ञान के क्षेत्र में महान राजा भोज का योगदान — 113
डॉ. आकाश ताहिर

23. बालाघाट नगर के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व — 119
डॉ. अनुभूति सेंडीमन एवं डॉ. सरोज एस. घोड़ेश्वर

24. सतपुड़ा क्षेत्र के विस्मृत क्रांतिकारी — 126
डॉ. कविता बघेल

25. 1857 क्रांति में शंकरशाह एवं कुँवर रघुनाथ शाह की भूमिका — 129
डॉ. विमला मरावी एवं श्री राजेन्द्र प्रसाद पटेल

26. रीवा राज्य के बघेल शासकों के अभ्युदय का ऐतिहासिक अध्ययन — 133
डॉ. जीतेन्द्र कुमार पाण्डेय

27. मोहनदास करमचंद गाँधी द्वारा दलित उत्थान के लिए किए गए प्रयास : "महात्मा गांधी जी द्वारा अस्पृश्यता निवारण का प्रारम्भ" — 137
डॉ. भावना खरे

28. राष्ट्रीय आंदोलन में छिन्दवाड़ा जिले के स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका — 140
डॉ. सिंधु लाहोरिया

29. होशंगाबाद जिले की सामाजिक संरचना एक ऐतिहासिक विवेचन — 143
डॉ. नर्बदा लाजवंशी

14. MahendraSahu

पुस्तक का शीर्षक
"महिला सशक्तिकरण और बदलती तस्वीर"

15. Dr. Maya Sahu

लेखक
डॉ मनीता कौर बिरदी

प्रकाशक
ब्राइटस्काई प्रकाशन
ऑफिस न. – 3, 1st फ्लोर, H-34/3, सेक्टर – 3, रोहिणी, दिल्ली – 110085
भारत

प्रथम संस्करण: 2021
पृष्ठ: 115
मूल्य: ₹ 726/-

Paperback ISBN: 978-81-952451-3-0

Book DOI: https://doi.org/10.22271/bs.book.16

मुद्रक
ब्राइटस्काई प्रकाशन
नई दिल्ली

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन है।

अध्याय - 6

महिला सशक्तिकरण: दशा और दिशा

डॉ. श्रीमति माया साहू

सारांश

महिला सशक्तिकरण की जरूरत क्यों? सशक्तिकरण की आवश्यकता सदियों से महिलाओं का पुरूषों द्वारा किए गए शोशण और भेदभाव से मुक्ति दिलाने के लिए हुई. महिलाओं की आवाज को हर तरीके से दबाया जाता है। महिलाएं विभिन्न प्रकार की हिंसा और दुनिया भर में पुरूषों द्वारा किए जा रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार से उन्हें आजादी दिलाकर महिलाओं को अपनी जिंदगी का फैसला करने की स्वतंत्रता देना या उनमें ऐसी क्षमताओं का विकास करना है, जिससे व समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित कर सके और सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था बनाने में योगदान करने की क्षमताओं का विकास करना है।

आज की नारी जीवन और समाज के हर क्षेत्र में कुछ करिश्मा कर दिखाने की चाह रखती है। उसमें छटपटाहट है आगे बढ़ने की। वह अपनी अथाह मेहनत और लगन से एक सशक्त इबारत लिखने के लिये बेताब है। तमाम बाधाओं के बावजूद महिलाएँ सभी क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रही हैं। यह सच है कि जीवन का हर क्षेत्र महिलाओं के बिना अधूरा है। यहाँ यह कहना उचित होगा कि–

"तुम हो तो ये घर लगता है
वरना इसमें डर लगता है।"

भारतीय समाज में स्त्रियों को सम्मानपूर्ण स्थिति प्राप्त रही है। स्त्री को शक्ति की साकार प्रतिमा के रूप में जाना जाता है। यहाँ स्त्री को देवी की संज्ञा दी जाती है एवं लक्ष्मी, दुर्गा, शक्ति के रूप में पूजा जाता है। भारतीय इतिहास का प्रारम्भ वैदिक युग से होता है। ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों को ऊँचा स्थान प्राप्त था। उस युग में नारी का समाज में आदर था। वह जीवन के सभी क्षेत्रों मे पुरूषों के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर कार्य करती थी। उसे पुरूष के समान ही सभी अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेयी उस युग मी ऐसी नारियाँ हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर ऋषियों का पद प्राप्त किया था। किन्तु कालांतर में पुरूष महिलाओं के अधिकारों को छीनता गया और महिलाओं की स्थिति में लगातार गिरावट आती गई। नारियों को 'हेय' माना जाने लगा। इसके कई उदाहरण भी मिलते है। जैसे

❐ क्षेत्रीय इतिहास के विविध आयाम
(सतपुड़ा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

16. Dr. Teekmani Patwari

❐ संपादक : डॉ. धनाराम

❐ संस्करण प्रथम संस्करण 2021

❐ ISBN : 978-81-945954-6-5

❐ मूल्य : 500 रूपये

❐ प्रकाशक : अर्थ पब्लिकेशन
छिन्दवाड़ा - 480001 (म.प्र.)
संपर्क : 7354153350
E-mail : earthpublication.cwa@gmail.com

❐ मुद्रक : अर्थ पब्लिकेशन एण्ड प्रिंटर

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन – फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/संपादक/प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध–पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/प्रकाशक इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

छिन्दवाड़ा जिले के लोक देवताओं का अध्ययन

डॉ. श्रीमती टीकमणि पटवारी, सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिंदवाड़ा, म.प्र.

लोक मानस (मन) में ये लोक देवता वेद–पुराण–उपनिषद्–धर्म ग्रंथ आदि से नही आते। ये तो लोक में ही बनते हैं और बस जाते हैं सदा–सदा के लिए लोक मानस में, लोक चेतना में। अब प्रश्न उठता है कि लोक देवताओं की उत्पत्ति और आराधना क्यों? इसका सीधा–सा उत्तर है कि जब लोक खेत में अथवा जंगल–पहाड़ में काम कर रहा हो या जीवकोपार्जन के निमित्त श्रमरत् हो और अचानक दैवीय या प्राकृतिक आपदा–विपदा आये जिसका तुरत समाधान अपने आस–पास से ही कर लेना चाहता है। इसी निमित्त लोक देवताओं को मनाता है।

स्पष्ट है लोक में इनकी पूजा–पाठ की विधि अलग और विशिष्ट होती है। लोक घटना और चमत्कार के आधार पर पूजता है। छिंदवाड़ा जिले के लोक देवताओं में विशिष्ट हैं –

चलनी देव

छिंदवाड़ा के ग्रामीण लोक में बेहद पूजे जाने वाला देव चलनी देव है। चलनी का आशय है चलता हुआ या चलने लगे। लोक में ऐसी मान्यता है कि यदि किसी के शरीर में चटक से संबंधित बीमारी हो जाती है तो वह इस स्थान पर जाता है और अगर उसे ऐसा कुछ है तो चलनी देव के स्थान में दोनों हाथ रखते ही देवशक्ति के हाथ आगे की ओर चलने लगते हैं और बीमारी ठीक हो जाती है। ऐसे मान्यता रखने वाले सभी जाते और ठीक भी हो जाते हैं। ठीक होने के उपरांत पूजा–पाठ के लिए पान–फूल–नीबू–नारियल चढ़ाया जाता है। यह देव स्थान मोहखेड़ ब्लॉक के ग्राम रजाड़ा में स्थित है।

माल देव

माल देव को अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। छिंदवाड़ा में इसे माल देव कहते हैं। गाय पालने वाले इस देवता को मानते हैं। लोक में ऐसी मान्यता है जो गाय पालता है और दूध का उत्पादन करता है वह माल देव को मनाता है। माल देव को मानने वाले बताते हैं कि हर साल या तीन साल में एक बार पान–फूल या मुर्गा–बकरा की बली दी जाती है। मालदेव का स्थान कहीं गाँव के बाहर तो कहीं जंगल में होता है।

दैय्यत बाबा

लोकदेव दैय्यत बाबा का स्थान हार–पहार या खेत में होता है। खेती–किसानी के लिए जागरत देवता माना जाता है। लोक खेती व फसलों में किसी प्रकार की

17. Dr. J.K. Dongre

ScienceDirect

Journals & Books | Register | Sign in

View PDF | Access through your institution | Purchase PDF

Outline

Chalcogenide-Based Nanomaterials as Photocatalysts

Micro and Nano Technologies

2021, Pages 185-218

8 - Chalcogenides-based nanomaterials for solar cells and dye sensitized solar cells

Show more

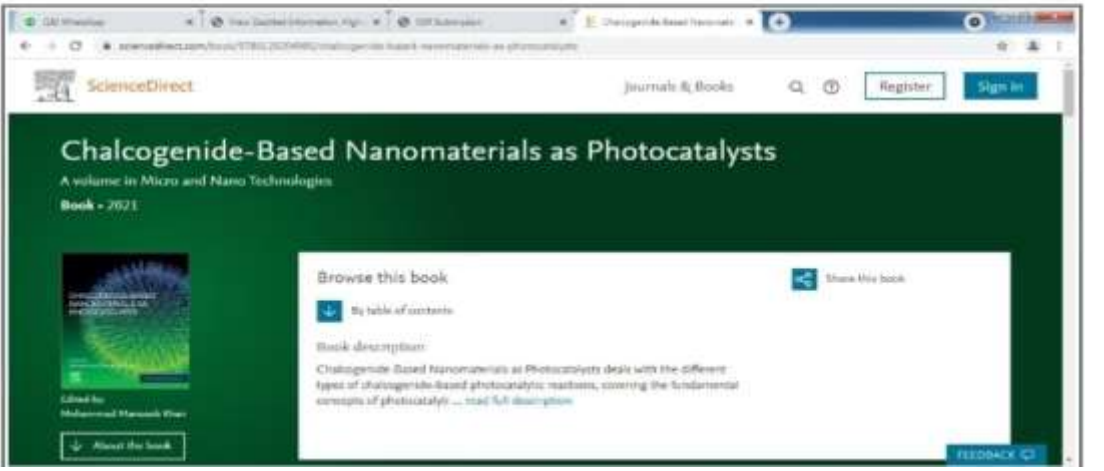

Add to Mendeley | Share | Cite

Get rights and content

Recommended articles

Citing articles (0)

FEEDBACK

ScienceDirect

Journals & Books | Register | Sign in

Chalcogenide-Based Nanomaterials as Photocatalysts

A volume in Micro and Nano Technologies

Book • 2021

Edited by:
Mohammad Mansoob Khan

About the book

Browse this book

By table of contents

Share this book

Book description

Chalcogenide-Based Nanomaterials as Photocatalysts deals with the different types of chalcogenide-based photocatalytic reactions, covering the fundamental concepts of photocatalytic ... read full description

FEEDBACK

ISBN: 978-0-12-820498-6

Language: English

Published: 2021

Imprint: Elsevier

DOI: https://doi.org/10.1016/C2019-0-01419-1

Copyright: Copyright © 2021 Elsevier Inc. All rights reserved.

You currently don't have access to this book, however you can purchase separate chapters directly from the table of contents or buy the full version.

Purchase the book

Editors

Mohammad Mansoob Khan

सत्यापित

प्राचार्य
Principal
Govt. P.G. College
Chhindwara (M.P.)
शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
छिंदवाड़ा (म.प्र.)